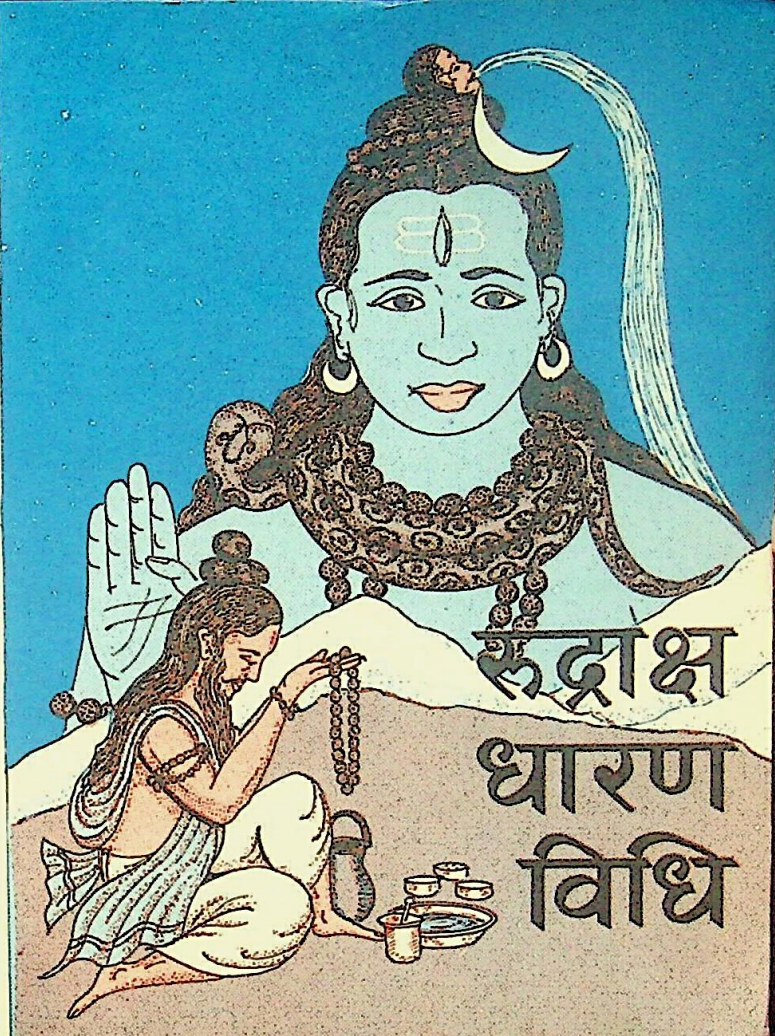
रुद्राक्ष
धारण
विधि

श्री :

रुद्राक्षधारणविधि

अशेष गुण सम्पन्न पं. बांकेलालात्मज श्रीयुत श्यामसुंदरजी शर्मा द्वारा संगृहीत और अनुवादित

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमाराजा श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : जुलाई २००६,

मूल्य : १० रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

ॐ

अथ रुद्राक्षधारणविधि

तथा माहात्म्य भाषाटीकोपेत

स्कन्द उवाच

भगवन्देव देवेश देवदेव जगत्पते।
पृच्छामि संशयं छिन्धि कथयस्व यथार्थतः ॥१॥

हे भगवन् हे देव हे देवेश हे देवदेव जगत्पते ! जो मैं आपसे पूछता हूँ उस संशय को दूर करके यथार्थ मेरे आगे आप कहो ॥१॥

वामदक्षिणसिद्धान्ते कथितं यन्महागुणम्।
पुण्यानां च महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ॥ २ ॥

वाममार्गी और दक्षिणमार्गियोंके सिद्धान्तमें कहे हुए रुद्राक्ष के जो महागुण हैं सो पुण्योंमें महत्पुण्यका देनेवाला पवित्र, पापको दूर करनेवाला है (अपिच) बांये घाई अथवा दक्षिण घाई रुद्राक्ष धारण करनेके लिए सिद्धान्तमें कहे हुए जो महागुण हैं सो वह रुद्राक्षपुण्यवान मनुष्यों को महत्पुण्यका देनेवाला और पवित्र, पापको दूर करनेवाला है ॥२॥

रुद्राक्षधारणं श्रेष्ठमिह लोके परत्र च ।
कथं जातः कथं नाम कथं वै धार्यते नरैः ।। ३ ।।

रुद्राक्ष धारण करना इस लोक और परलोकके लिए श्रेष्ठ है सो कैसे वो उत्पन्न होता हुआ क्या उसका नाम है और किस प्रकार मनुष्य उसको धारण करें ।।३।।

कति वक्त्राणि किं मंत्र कथयस्वाशु विस्तरम्

और कितने मुख हैं और कौनसे मंत्र हैं जिसे करके मनुष्य उसको धारण करें सो शीघ्रही विस्तारसहित आप मेरे आगे कहो ।।

ईश्वर उवाच

शृणु षण्मुख तत्त्वेन कथयामि समासतः ।
त्रिपुरो नाम दैत्येन्द्रः पूर्वमासीत्सुदुर्जयः ।। ४ ।।

महादेवजी बोले–हे स्कन्दजी तुम सुनो तुम्हारे आगे इस तत्त्वको कहता हूँ पहिले त्रिपुरनामक दैत्योंका राजा होता हुआ और कोई उसके जीतनेको सामर्थ्य नहीं रखता था जो उसको जीत सके ।। ४ ।।

जितास्तेन सुराः सर्वे ब्रह्मविष्णुवह्नपन्नगाः
प्रार्थितोहं ततस्तैस्तु वधाय त्रिपुरस्य तु ।।५।।

उस त्रिपुर दैत्यने संपूर्ण देवताओंको जीत लिया तब ब्रह्मा विष्णु इन्द्र पन्नग मिलकर मेरे पास आए और त्रिपुरदैत्यको मारने के लिए प्रार्थना की ॥ ५ ॥

तत्र सञ्चिन्त्य वेगेन धनुस्तत्सहितं मया ।
त्रिपुरस्य वधार्थाय लोकानां रक्षणाय च ॥ ६ ॥

तब मैं अपने मनमें चिन्ता करने लगा वेग करके, धनुषबाणको हाथमें लेकर त्रिपुरदैत्यको मारनेके अर्थ संसारकी रक्षा करनेके लिए ॥ ६ ॥

सर्वदेवमयं दिव्यमघोरास्त्रं भयापहम् ।
वज्रवच्चैव युष्प्रेक्ष्यं कालाग्निर्नाम नामतः ॥ ७ ॥

संपूर्ण देवतामय दिव्य अर्थात सुन्दर भयको दूर करनेवाला बिजली के समान जिसके देखनेको कोई सामर्थ्य नहीं रखता ऐसा कालाग्नि नामक जो अघोर अस्त्र है ॥ ७ ॥

दिव्यैर्वर्षसहस्रैस्तु चक्षुरुन्मीलितं मया ।
विह्वलव्याकुलादक्षणः पतिता जलबिन्दवः ॥ ८ ॥

उसको देख करके देवताओंके १००० हजार वर्ष तक नेत्रोंको उन्मीलन करता हुआ तब विह्वलता और व्याकुलतासे जलकी कणिका नेत्रोंसे गिरती भई ॥ ८ ॥

तेनाश्रुबिंदुभिर्जाता मर्त्ये रुक्षाक्षभूरुहाः ।।
स्थावरत्वमनुप्राप्ता लोकानुग्रहकारकाः ।। ९ ।।

उसी नेत्रके जलमें मनुष्यलोकमें रुद्राक्षके वृक्ष उत्पन्न हो स्थावरत्व को प्राप्त होते हुए संसारके हितके अर्थ ।। ९ ।।

रुद्राक्षाणां फलं तस्य त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
लक्षं तत्स्पर्शने पुण्यं कोटिर्भवति मालनात् ।। १० ।।

उस रुद्राक्षके जो फल हैं सो तीनों लोकोंके विषे विद्युत हो रहे हैं। उनके स्पर्श करनेसे लक्ष गुण फल प्राप्त होता है और उनकी माला बना के पहरनेसे करोडगुण फल प्राप्त होता है ।। १० ।।

दशकोटिसहस्राणि धारणात्फलमश्नुते ।
लक्षकोटिसहस्राणि लक्षकोटिशतानि च ।। ११ ।।
जपस्य लक्ष्यते पुण्यं नात्र कार्या विचारणा ।। १२ ।।

दश करोड़ और हजार करोड़ पुण्यका फल और हजार करोड़ और लक्ष कोटि शत पुण्यका फल उसके जप करनेसे मनुष्यको प्राप्त होता है इसमें कुछ संशय नहीं है ।। ११ । १२ ।।

हस्ते कर्णे तथा शीर्षे कण्ठे रुद्राक्षधारणात् ।
अवध्यः सर्वभूतानां रुद्रवच्चरते भुवि ।। १३ ।।

जो मनुष्य हाथमें, कानमें शिरमें, कंठमें, रुद्राक्ष धारण करते हैं वे सर्व सांसारिक मनुष्योंको दुर्वाच्य और मारने के योग्य नहीं हैं। उनको इस प्रकार समझना चाहिये कि पृथ्वीके ऊपर शिवजी महाराज विचरते हैं ॥ १३ ॥

सुरासुराणां सर्वेषां वन्दनीयो यथा शिवः ।
तथा भवति लोकेस्मिन्यो रुद्राक्षधरः सदा ॥ १४ ॥

जैसे समस्त देवता और राक्षसोंको शिवजी महाराज वंदनीय अर्थात पूजा करने योग्य हैं उसी प्रकार संसारके विषे रुद्राक्षको धारण करनेवाला मनुष्य सर्व सांसारिक मनुष्योंके वंदनीय अर्थात पूजा करने योग्य है ॥ १४ ॥

उच्छिष्टो वा विकर्मो वा युक्तो वा सर्वपातकैः ।
मुच्यते सर्वपापेभ्योरुद्राक्ष स्पर्शनेन वै ॥ १५ ॥

जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं अथवा बुरे कर्म करनेवाले अथवा अनेक प्रकारके पातकोंसे युक्त जो मनुष्य हैं वो रुद्राक्ष के स्पर्श करतेही संपूर्ण पापों से छूट जाते हैं ॥ १५ ॥

कण्ठे रुद्राक्षमादाय म्रियते यदि वातैः खरः ।
सोऽपिरुद्रत्वमाप्नोति किं पुनर्भुवि मानवः ॥ १६ ॥

कंठमें रुद्राक्ष धारण कर जो खर भी मृत्युको प्राप्त हो जाय तो वह भी रुद्र स्वरूपको प्राप्त होता है फिर पृथ्वीके विषे जो मनुष्य हैं।

उनकी क्या इससे सर्व सांसारिक मनुष्योंको अवश्यमेव रुद्राक्ष धारण करना उचित है ॥ १६ ॥

कार्त्तिकेय उवाच

एक वक्त्रं द्विवक्त्रंञ्च त्रिचतुः पञ्चकं तथा ।
षट्सप्ताष्टनवास्यञ्च दशैकादशमेव च ॥ १७ ॥

स्कंदजी बोले कि–हे शिव ! एक मुखी द्विमुखी त्रिमुखी चतुर्थमुखी पञ्च मुखी षण्मुखी सप्तमुखी अष्ट मुखी नवमुखी दशमुखी एका दशमुखी ॥ १७ ॥

तथा द्वादशवक्त्राणि त्रयोदश चतुर्दश ।
प्रत्येकमेषाञ्च गणान्ब्रूहि मे भगवञ्छिव ॥ १८ ॥

उसी प्रकार द्वादश मुखी त्रयोदश मुखी चतुर्दश मुखी रुद्राक्षोंके एक एकके प्रति जो महागुण हैं उनको हे भगवन् ! हे शिव ! मैं आपसे पूछता हूँ सो आप कहो ॥ १८ ॥

शिव उवाच

शृणु षण्मुख तत्त्वेन वक्त्रे वक्त्रे तथा फलम् ।
एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ १९ ॥

शिवजी बोले–षण्मुख जौन २ मुखी रुद्राक्ष जिस २ फलको

देनेवाला, है उसको तुम सुनो मैं कहता हूँ एक मुखी रुद्राक्ष साक्षात शिव स्वरूप है ब्रह्महत्याको दूर करनेवाला है ।। १९ ।।

द्विवक्त्रो देवदेवेशो गोवधं नाशयेद्ध्रुवम् ।

द्विमुखी रुद्राक्ष साक्षात देव देवेशका स्वरूप है गोवध करनेके पापोंसे छुड़ानेवाला है ।

त्रिवक्त्रोग्निश्च विज्ञेयः स्त्रीहत्यां च व्यपोहति ।। २० ।।

त्रिमुखी रुद्राक्ष साक्षात अग्नि स्वरूप है स्त्रीहत्याको दूर करने वाला है ।। २० ।।

चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्यां व्यपोहति ।

चतुर्मुखी रुद्राक्ष स्वयं ब्रह्मा है नर हत्याको दूर करनेवाला है ।।

पञ्चववक्त्रः स्वयं रुद्रःकालाग्निर्नामि नामतः ।। २१ ।।

पञ्चमुखी रुद्राक्ष स्वयं कालाग्नि नाम करके रुद्र स्वरूप है ।। २१ ।।

अगम्यागमनं चैव तथा चाभक्ष्यभक्षणम् ।
मुच्यते नात्र सन्देहः पञ्चववक्त्रस्य धारणात् ।। २२ ।।

अगम्य अर्थात पर स्त्री के साथ गमन करनेसे तथा अभक्ष्य भक्षण करने से जो पाप लगता है वह पञ्चमुखी रुद्राक्षके धारण करने से नाशको प्राप्त हो जाता है । इसमें कुछ संशय नहीं है ।। २२ ।।

षड्वक्त्र कार्त्तिकेयस्तु धारयेद्दक्षिणे भुजे।
भ्रूणहत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ २३ ॥

षटमुखी रुद्राक्ष स्वयं कार्त्तिकेय है। उसको जो मनुष्य अपनी दक्षिण भुजामें धारण करते हैं वे भ्रूणहत्यादि पापोंसे छूट जाते हैं। इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ २३ ॥

सप्तवक्त्रो महासेन अनन्तो नाम नामतः।
स्वर्णस्तेयं गोवधञ्च कृत्वा पापशतानि च ॥ २४ ॥

हे महासेन! सप्तमुखी रुद्राक्ष अनन्त नाम करके विख्यात है जिन मनुष्योंने सोनेकी चोरी की है। गोवध किये हैं अथवा अनेक प्रकारके सैकडों पाप किये हैं ॥ २४ ॥

मुच्यते नात्र सन्देहः सप्तवक्त्रस्य धारणात्।

सप्तमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे मनुष्य उन पापोंसे छूट जाता है। इसमें कुछ संदेह नहीं है।

अष्टवक्त्रो महासेन साक्षाद्देवो विनायकः ॥ २५ ॥

हे महासेन! अष्टमुखी रुद्राक्ष साक्षात गणेशजीका स्वरूप है ॥ २५ ॥

मानकूटादिजं पापं परस्त्रीजन्यमेव च।
तत्पापं न भवेद्वत्स अष्टवक्त्रस्य धारणात् ॥ २६ ॥

हे वत्स ! मानकूटादिक और परस्त्रीजन्य जो पाप हैं वे अष्टमुखी रुद्राक्षके धारण करने से मनुष्योंको नहीं लगते हैं ॥ २६ ॥

नवमं भैरवं नाम कापिलं मुक्तिदं स्मृतम् ।
धारणाद्वामहस्ते तु मम तुल्यो भवेन्नरः ॥ २७ ॥

नवमुखी रुद्राक्षका भैरव नाम है कपिलवर्ण है जो मनुष्य अपनी वाम भुजामें धारण करते हैं वह मेरे तुल्य हो जाते हैं ॥ २७ ॥

लक्षकोटिसहस्राणि पापानि प्रतिमुञ्चति ॥

नवमुखी रुद्राक्ष लक्ष हजार करोड़ पापोंकी नाश करनेवाला है ।

दशवक्त्रो महासेन साक्षाद्देवो जनार्दनः ॥ २८ ॥

हे महासेन ! दशमुखी रुद्राक्ष साक्षात जनार्दन अर्थात विष्णुका स्वरूप है ॥ २८ ॥

ग्रहाश्चैव पिशाचाश्च वेताला ब्रह्मराक्षसाः ।
नागाश्च न दशन्तीह दशवक्त्रस्य धारणात् ॥ २९ ॥

दशमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे मनुष्यके सर्व ग्रह शांत रहते हैं और पिशाच, वेताल, ब्रह्मराक्षस, सर्प इत्यादिका भय नहीं होता ॥ २९॥

एकादशास्यो रुद्रो हि रुद्राश्चैकादश स्मृताः ।
शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ३० ॥

हे स्कंद ! एकादशमुखी रुद्राक्ष पुराणोंके विषे जो एकादशरुद्र वर्णन किये हैं सो उनमें से साक्षात रुद्रस्वरूप हैं जो मनुष्य अपनी शिखा में धारण करते हैं उनके पुण्यके फलको मैं वर्णन करता हूँ उसको तुम सुनो। ३० ॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
ग्रहणे चैव सोमस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ॥ ३१ ॥

हजार अश्वमेध यज्ञ करनेका फल सौ वाजपेय यज्ञ करनेका फल और चन्द्रग्रहण में दान करनेसे जो फल प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

तत्फलं लभते मर्त्यो रुद्रवक्त्रस्य धारणात् ॥

सो फल मनुष्यको एकादशमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे प्राप्त होता है।

द्वादशास्यो हि रुद्राक्षो साक्षाद्देवः प्रभाकरः ॥ ३२ ॥

द्वादशमुखी रुद्राक्ष साक्षात सूर्यका स्वरूप है ॥ ३२ ॥

रुद्राक्षं द्वादशास्यन्तु धारयेत्कण्ठदेशतः ।
गवां बधं नरवधं महारत्न हरन्ति ये ॥ ३३ ॥

द्वादशमुखी रुद्राक्षको जो मनुष्य अपने कंठमें धारे रुद्राक्षान्कंठदेशे दशनपरिमितान-दांतोंकी संख्याके बराबर अर्थात (३२)

जो धारण करते हैं उन मनुष्योंने यद्यपि गोवध, किये हैं मनुष्य हत्या की हैं स्वच्छ अमूल्य रत्न चुराए हैं ॥ ३३ ॥

नश्यन्ति तानि पापानि वक्त्रद्वादशधारणात् ।
आदित्याश्चैव ते सर्वे द्वादशैव व्यवस्थिताः ॥ ३४ ॥

तथापि द्वादशमुखी रुद्राक्षके धारण करने से उन मनुष्योंके पाप नाशको प्राप्त हो जाते हैं क्योंकि सूर्यसे आदि लेकर संपूर्ण आदित्य द्वादशमुखी रुद्राक्षमें वास करते हैं ॥ ३४ ॥

न चौराग्निभयं तस्य न च व्याधिः प्रजायते ।
अर्थवान्सुभगश्चैव दरिद्रश्चापि यो नरः ॥ ३५ ॥

इसलिये उन मनुष्योंको चोर, अग्निका भय तथा अनेक प्रकारकी व्याधि नहीं होती और वे अर्थवान होते हैं यदि दरिद्री भी हों तब भी भाग्यवान हो जाते हैं ॥ ३५ ॥

हस्त्यश्वमृगमार्जारामहिषः सूकरास्तथा ।
श्वानदंष्ट्रिभृगालाश्च न बाधन्ते कदाचन ॥ ३६ ॥

हाथी, घोडा, हरिण, बिलाव, भैंसा, शूकर, उसी प्रकार श्वान अर्थात कुत्ता, दाढवाले, भृगाल अर्थात स्यार से उन मनुष्यों को बाधा नहीं करते हैं ॥ ३६ ॥

त्रयोदशास्यो रुद्राक्षो साक्षाद्देवः पुरन्दरः ।

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष साक्षात इन्द्रका स्वरूप है ।।

त्रयोदशास्यं रुद्राक्षं वत्स यो धारयेन्नरः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति सौभाग्यमतुलं भवेत् ।। ३७ ।।

हे वत्स ! जो मनुष्य त्रयोदश मुखी रुद्राक्षको धारण करते है उनकी सम्पूर्ण कामना प्राप्त होती है और अतुल अर्थात तुलायमान नहीं ऐसे भाग्यवान होते हैं ।। ३७ ।।

सर्वरसायनं चैव धातुवादस्तथैव च ।
सर्वं सिध्यन्ति रुद्राक्षान्धारयन्ति च ये नराः ।।३८ ।।

और सम्पूर्ण धातुओंकी रसायनादिक सिद्धिके लिये प्राप्त होती हैं जो मनुष्य त्रयोदशमुखीको धारण करते हैं ।। ३८ ।।

मुच्यंते पातकैः सर्वैस्तथा चैवोपपातकैः ।। ३९ ।।

और वे संपूर्ण पापोंसे छूट जाते हैं और उपपातकोंसे भी ।। ३९ ।।

चतुर्दशास्यो रुद्राक्षो साक्षाद्देवो हनूमतः ।।
धारयेन्मूर्ध्नि यो नित्यं स याति परमं पदम् ।। ४० ।।

चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष साक्षात हनुमानका स्वरूप है जो मनुष्य नित्य प्रति अपने मस्तक पर धारण करते हैं वो परम पदके लिए प्राप्त होते हैं ।। ४० ।।

स्कन्द उवाच

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि वक्त्राणां मंत्रमुत्तमम् ।
के गुणाः स्युरमंत्रयेण समंत्रेणैव के गुणाः ॥ ४१ ॥

स्कंद बोले हे भगवन् ! मैं सुननेकी इच्छा करता हूं रुद्राक्ष धारण करनेके उत्तम मंत्रोंके गुणोंको कि जो मनुष्य मंत्र सहित रुद्राक्षको धारण करते हैं और जो मंत्ररहित अर्थात वैसे ही पहिर लेते हैं सो उनके गुणोंको मेरे आगे आप कहो ॥ ४१ ॥

शिव उवाच

रुद्राक्षस्य च माहात्म्यं वक्तुं नैवात्र शक्यते ।
अहं ते कथयिष्यामि शृणुष्व सुरसत्तम ॥ ४२ ॥

शिवजी बोले–कि हे सुर सत्तम ! रुद्राक्षके माहात्म्यको कहनेको किसीको सामर्थ्य नहीं है मैं तेरे आगे वर्णन करता हूं उसको तुम सुनो ॥ ४२ ॥

यः पुमान्मंत्रसंयुक्तं धारयेद्भुवि मानवः ।
रुद्रलोके वसेत्सत्य सत्यमेतन्न संशयः ॥ ४३ ॥

जो मनुष्य पृथ्वीके विषे रुद्राक्षको मन्त्र सहित धारण करते हैं वह रुद्रलोकमें जाकर वास करते हैं इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ ४३ ॥

विना मंत्रेण यो धत्ते रुद्राक्षं भुवि मानवः ।
स याति नरके घोरे यावदिंद्राश्चतुर्दश ।। ४४ ।।

और जो मनुष्य पृथ्वीके विषे मंत्ररहित रुद्राक्षको धारण करते हैं वह घोर नरकमें जाकर वास करते हैं जव तक चतुर्दश इंद्र पृथ्वी के ऊपर वर्त्तमान हैं ।। ४४ ।।

मंत्रानेतांस्तु वक्ष्यामि शृणु वत्स यथाक्रमम् ।।४५ ।।

हे वत्स ! जिस जिस मंत्र द्वारा मनुष्यको रुद्राक्ष धारण करना चाहिये वे मंत्र मैं तेरे आगे कहता हूं जिसको तुम सुनो ।। ४५ ।।

एकमुखी से आदि लेकर चतुर्द्दशमुखीपर्यन्त रुद्राक्ष धारण करनेकी विधि ।

अथ एकमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ऊँ एं हं औं ऐं ऊँ । इति मंत्रः ।

अस्य श्री शिव मंत्रस्य प्रासाद ऋषिःपंक्तिः छन्दः शिवो देवता हंकारो बीजम् औं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । वामदेव ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे ॠ ऐं ऐं नमः हृदि, हं बीजाय नमो गुह्ये ओं शक्तये नमः पादयोः

ॐ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ औं ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ऐं ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ ह्रूँ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इति करन्यासः ॥ (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ औं ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ऐं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ (अथ ध्यानम्) मुक्तापीनपयोदमौक्तिकचजपावर्णैर्मुखैः पञ्चभिस्त्र्यक्षैराजितमीशमिन्दुमुकुटं पूर्णेन्दुकोटिप्रभम् ॥ शूलं टंककृपाणवज्रदहनान्नागेन्द्रघंटाशुकं हस्ताब्जेष्वभयंवरांश्चदधतं तेजोज्ज्वलं चिन्तये ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य कुर्याज्जपसहस्रकं तदनन्तरमाभिमुख्यसामीप्यं घटोपरि ताम्रपात्रं निधाय तत्र रुद्राक्षं क्षिप्त्वा पंक्तिप्राणायामं कृत्वा। पश्चात् वामे जलपात्रं धृत्वा जत्र तले सव्यहस्तं धृत्वा दक्षिणपाणिना सहस्रजपं कुर्यात। पुनस्तस्योपरि जलं क्षिपेत रुद्राक्षं धारयेत्। एवं सर्वत्र विधिर्ज्ञेयः ॥

अथ द्विमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ क्षीं ह्रीं क्ष्रौं ह्रीं ॐ। इति मंत्रः।

अस्य श्रीदेवदेवेशमन्त्रस्य अत्रिर्ऋषि गायत्री छन्दः देवदेवेशो देवता क्ष्रौं बीजं क्ष्रौं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। अत्रिऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे

देवदेवेशाय नमो हृदि। क्ष्रौं बीजाय नमो गुह्ये। क्ष्रौं शक्तये नमः पादयोः। (करन्यासः) ॐ ॐ अँगुष्ठाभ्यां नमः ॐ क्ष्रौं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ क्ष्रां अनामिकाभ्यां हूँ, ऊँ क्ष्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (आथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ क्ष्रौं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं शिखायै वषट्। ॐ क्ष्रौं कवचाय हुँ। ॐ व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ॐ उँ अस्त्राय फट्॥ '(अथ ध्यानम्)। तपनसोमहुताशनलोचनं घनसमानगलं शशिसुप्रभम्। अभयचक्रपिनाकवराकन्दरैर्दधतमिन्दधरं गिरिशं भजेत्।

अथ त्रिमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ रँ इँ ह्रीं ह्रूं ओं। इति मंत्रः।

अस्य श्री अग्निमंत्रस्य वसिष्ठज ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निदेवता ह्रीं बीजं ह्रूं चतुर्वर्गसिध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपेविनियोगः। वसिष्ठजऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे अग्निदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। हँ शक्तये नमः पादययोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नमः। ऊँ रं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ इं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां हूं। ॐ ह्रूं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाम नमः। ॐ हूँ शिरसे स्वाहा। ॐ

शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं कवचाय हुं। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ॐ अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) अष्टशक्ति स्वस्तिकामातिमुच्चैर्दीर्घैरेभिधारयंतं जपाभम्। हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्याये द्वंह्नि बद्धमौलि जटाभिः।। ३।। इति त्रिमुखी०।

अथ चतुर्मुखीरुद्राक्षधारणविधिः।

। वां क्रां तां ह्रां ई । इति मंत्रः।

अस्य श्रीब्रह्मामन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता वां वीजं क्रां शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः।। भार्गवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे। ब्रह्मादेवतायै नमो हृदि। वां बीजाय नमो गुह्ये। क्रां शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वाँ तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ तां अनामिकाभ्यां हूं। ॐ हाँ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ईं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयायनमः। ॐ वां सिरसे स्वाहा। ॐ क्रां शिखायै वषट्। ॐ तां कवचाय हूँ। ॐ ह्रां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ई, अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) प्रणम्य शिरसा शश्वदष्टवक्त्रं चतुर्मुखम्। गायत्री सहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम्।। ५।। इति चतुर्मुखी०।

अथ पञ्चमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा । इति मंत्रः ।

अस्य श्रीमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः सदाशिवकालाग्निरुद्रो देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । ब्रह्मऋषये नमः शिरसि । गायत्रीछन्दसे नमो मुखे । श्रीसदाशिवकालाग्निरुद्रदेवतायै नमो हृदि । ऊँ बीजाय नमो गुह्ये । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रां तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ आं मध्यमाभ्यां वषट । ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां हूँ । ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा, करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् ।। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा । ॐ आं शिखायै वषट् । ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हूँ । ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषटं ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट् ('अथ ध्यानम्) हावभावलिसार्द्धनारिकं भीषणार्धमथवा महेश्वरम् । दाशसोत्पलकपालशूलिनं चिन्तये जपविधौ विभूतये ।।५।। इतिपञ्चमु० ।

अथ षण्मुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं । इति मंत्रः ।

अस्य श्रीमंत्रस्य दक्षिणा मूर्त्ति ऋषिः पंक्तिछन्दः कार्त्तिकेय देवता ऐं बीजं सोंशक्तिःक्लीं कीलकं अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धार-

णार्थे जपे विनियोगः दक्षिणा मूर्त्तिऋषयेनमः शिरसि पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे। कार्त्तिकेयदेवतायै नमो हृदि ऐं वीजाय नमो गुह्ये। सौं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शिखायै वषट् ॐ क्लीं कवचाय हुँ। सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) क्रौंचपर्वतविदा रणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः। चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्षडानन जगत्परिपाहि ॥ ६ ॥ इति षण्मुखी०।

अथ सप्तमुखीरुद्राक्ष धारणविधिः

ॐ हं क्रीं ह्रीं सौं। इति मंत्रः।

अस्य श्रीअनंत मन्त्रस्य भगवान् ऋषिः गायत्री छंदः अनन्तो देवता क्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः। भगवान् ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे अनंत देवतायै नमो हृदि। क्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अँगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ग्लीं अनामिकाभ्यां हुँ ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ स्त्रों करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

(अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ ह्रूं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रीं शिखायै वषट्। ॐ ग्लौं कवचाय हुँ। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्त्रीं विष्वक्वन्धूक आकारं कुर्माल्लं प्रपूजयेत।

अथ अष्टमुखीरुद्राक्षधारणविधिः।

ॐ ह्लां ग्रीं लं आं श्रीं। इति मंत्रः।

अस्य श्रीगणेशमंत्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विनायको देवता ग्रीं बीजं आं शक्तिः चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। विनायक देवतायै नमो हृदि। ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये। आं शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐग्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ॐ अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ आं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्लां शिरसे स्वाहा ॐग्रीं शिखायै वषट् ॐ यँ कवचाय हुँ, ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ श्रीं अस्त्राय फट्। (अथध्यानम्) हरतु कुलगणेशो। विघ्नसंधानशेषान् नयतु संकलसम्पूर्णतां साधकानाम्। पिबतु बटुकनाथः शोषितं निन्दकानां दिशतु सकलकामान् कौलिकानां गणेशः॥

अथ नवमुखीरुद्राक्ष धारणविधिः

ॐ ह्रीं वँ यँ लँ रँ। इति मंत्रः।

अस्य श्रीभैरवमंत्रस्य नारदऋषिः गायत्री छन्दः भैरवो देवता बीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछंदसे नमो मुखे, भैरवदेवतायै नमो हृदि वँ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ कर-न्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ वँ मध्यमाभ्यां वषट् ॐ यँ अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ रं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ लँ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ वँ शिखायै वषट् ॐ यँ कवचाय हुँ, ॐ रँ नेत्रत्रयाय, वौषट् ॐ लँ अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) कपालहस्त-भुजगोपवीतं कृष्णच्छविंदण्डधरं त्रिनेत्रम्। अचिन्त्यमाद्यं मधुपानमत्तं हृदि स्मरेदभैरवमिष्टदं नृणाम्॥ ९॥

अथ दशमुखीरुद्राक्ष धारणविधिः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ओम् इति मंत्रः।

अस्य श्रीजनार्द्दनमंत्रस्य नादरऋषिः अनुष्टुप्छंदः जनार्द्दनो देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे

विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे: जनार्द्दनदेवतायै नमो हृदि, श्रींबीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहाः, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट् ॐ ह्रीं कवचाय हुँ, ॐ व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ॐ अस्त्राय फट्।। (अथ ध्यानम्) विष्णु शारदचंद्र कोटिसदृशं शंखं रथांगं गदामम्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कांत्यां जगन्मोहनम्। आवद्धांगदहारकुण्डलमहामौलिस्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंवन्दे मुनीन्द्रैस्स्तुतम्।। १०।। इति दशमुखी०।

अथ एकादशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ रूं मूं यूं औं। इति मंत्रः।

अन्य श्रीरुद्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता रूँ बीजं क्षूं शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः कश्यप ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, रुद्र देवतायै नमो हृदि, रूं बीजाय नमो गुह्ये, क्षूं शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यासः, ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ रूं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ मूं अनामिकाभ्यां हुं ॐ यूं कनिष्ठिकाभ्यां

वौषट्, ॐ औं करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ रूँ शिरसे स्वाहा, ॐ क्षूं शिखायै वषट् ॐ मूंक-वचाय हुँ ॐ यूं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ औं अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) बालार्कायुतेजसं धृतजटाजूटेन्दुखण्डोज्ज्वलं नागेन्द्रैः कृतशेखरं जपवटीं शूलं कपालं करैः ॥ खट्वांगं दधतं त्रिनेत्रविलसत्पञ्चाननं सुन्दरं व्याघ्रत्वक्परिधानमब्जनिलयं श्रीनीलकण्ठं भजेत् ॥ ११ ॥

इति एकादशमुखी०

ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं। इति मंत्रः।

अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः गायत्री छन्दः विश्वेश्वरो देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः घृणिः कीलकं रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे विश्वेश्वरो देवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्षौं श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ घं श्रीं अनामिकाभ्यां हुँ ॐ णिः श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ॐ ॐ श्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्षौं श्री

शिखायै वषट् । ॐ हृं श्रीं कवचाय हुँ, ॐ णिं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) शोणांभोरुहसंस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं दानांभोजयुगाभयानि दधतं हस्तैः प्रबालप्रभम् । केयुरांगदकंकणद्वयधरं कर्णैर्लसत्कुण्डलं लोकोत्पत्तिविनाशपालनकरं, सूर्यं गुणाद्रिं भजेत ।। १२ ।।

इति द्वादशमुखी०

अथ त्रयोदशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ईं यां आप ओं । इति मंत्रः ।

अस्य श्रीइन्द्र मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्तिः छन्दः इन्द्रो देवता ईं बीजम् आप इति शक्तिः रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि । पंक्तिः छन्दसे नमो मुखे । इन्दो देवतायै नमो हृदिः । ईं बीजाय नमो गुह्ये आप इति शक्तये नमः पादयोः । (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ यां मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ आप अनामिकाभ्यां हूँ । ॐ ॐ कनिष्ठकाभ्यां वौषट् । ॐ ईं यां आप औं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ईं शिरसे स्वाहा यां शिखायै वषट् । ॐ आप कवचाय हुँ । ॐ ॐ नेत्रत्रयाय । वौषट्, ॐ ईं यां आप ॐ अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्)

पीतवर्णं सहस्राक्षं वज्रपदमधरं विभुम् । सर्वालंकारसंयुक्तं नौमीन्द्रादिकमीश्वरम् ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ औं ह स्फें खव्फ्रैं हस्त्रौं हसव्फ्रैः । इति मंत्रः ।

अस्य श्रीहनुमन्त्रस्य रामचन्द्र ऋषिः जगती छन्दः श्रीं हनुमद्देवता ओं बीजं हस्फैं शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि । जगती छन्दसे नमो मुखे । हनुमद्देवतायै नमो हृदि । ओं बीजाय नमो गुह्ये । हस्फें शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ औं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ हस्फें मध्यमाभ्यां वषट् ॐ खव्फें अनामिकाभ्यां हूँ । ॐ हस्त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ हसव्फें करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ औं शिरसे स्वाहा । ॐ हस्फें शिखायै वषट् । ॐ खव्फें कवचाय हुँ । ॐ ह्रसस्फैं अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) उद्यन्मार्त्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखाशोभित् कुण्डलाभ्याम् । भक्तानामिष्टदानप्रवणमनुदिने वेदनादप्रमोदं ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवगकुलकपतिं गोष्पदीभूतवार्द्धिम् ॥

एतैर्मंत्रैः क्रमेणैकमुखादिधारणं नमः ॥ ४६ ॥

इन मंत्रोंसे क्रम करके एक मुखीसे लेकर चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष धारण कर नमस्कार करे ॥ ४६ ॥

देवानाञ्च यथा विष्णुर्ग्रहाणां च यथा रविः ।
रुद्राक्षं यस्य कण्ठं वा देहे गेहे स्थितोपिवा ॥ ४७ ॥

जैसे समस्त देवताओंमें विष्णु, नवग्रहोंमें सूर्य श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार उस मनुष्यको समझना चाहिये जो कंठमें वा देहमें अथवा जिन घरके विषे रुद्राक्ष स्थित होवे ॥ ४७ ॥

कुलैकविंशमत्तार्यं रुद्रलोके महीयते ।
मृन्मयं वापिरुद्राक्षं कृत्वा चैवावधारयेत् ॥ ४८ ॥

तो वे मनुष्य इक्कीस २१ कुलोंको तार रुद्रलोकमें जाकर वास करते हैं। मिट्टीका रुद्राक्ष बनाकर जो मनुष्य अपनी देहके विषे धारण करते हैं ॥ ४८ ॥

अपि दुष्कृतकर्माणि यांति ते परमां गतिम् ।
शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि अभक्षमपिभक्षयेत् ॥ ४९ ॥

पवित्र तथा अपवित्र रहनेवाले, अभक्ष भक्षण करनेवाले और

उन मनुष्योंने दुष्कृत कर्म भी किये हैं तो भी वे रुद्राक्षके धारण करनेसे परम गतिके लिये प्राप्त हो जाते हैं ॥ ४९ ॥

अगम्यागामिनश्चैव ब्रह्महा गुरुतल्पगः ।
नास्तिकादाम्भिकाश्चापिसंयांतिपदमव्ययम् ॥ ५० ॥

अगम्य (अर्थात्) पर स्त्री उनमें गमन करनेवाले ब्रह्महत्या करनेवाले गुरुकी शय्यापर बैठनेवाले, नास्तिक अर्थात धर्म निन्दक दाम्भिक अर्थात कपटी पुरुष रुद्राक्षको धारण करनेसे अव्यय-पदको प्राप्त हो जाते हैं ॥ ५० ॥

म्लेच्छोथ वापि चाण्डालो युक्तो वा सर्वपातकैः ।
रुद्राक्षं धारयेद्यस्तु स रुद्रो नात्र संशयः ॥ ५१ ॥

म्लेच्छ चाण्डाल अथवा संपूर्ण पापोंसे युक्त जो मनुष्य रुद्राक्ष धारण करते हैं वो रुद्रस्वरूपको प्राप्त हो जाते हैं। इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ ५१ ॥

रुद्राक्षान्कण्ठदेशे दशनपरिमितान्मस्तकेंविंशती द्वे षट् षट्कर्णप्रदेशे करयुगलगतान् द्वादशद्वादशैव । बाह्वोरिंदोः कलाभिः पृथगिति गदितं ह्येकमेवं शिखायां-वक्षस्यष्टाधिकं यः कलयति शतकं स स्वयं नीलकण्ठः ॥ १ ॥

जो मनुष्य कण्ठमें ३२ शिरमें ४० छः छः कानोंमें बारह बारह करोंमें सोलह सोलह भुजाओंमें १ शिखामें और १०८ हृदयमें रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात् महादेवके सदृश है ।। १ ।।

हस्ते कर्णे तथा शीर्षे कण्ठे रुद्राक्षधारणात् ।
अबध्यः सर्वभूतानां रुद्रवच्चरते भुवि ।। रु० वि०

रुद्राक्षधारणविधि समाप्त

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS